International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वामी विवेकानंद की धर्म विषयक विचारधारा

मधुप मालवीय, शोध छात्र
दर्शनशास्त्र विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय प्रयागराज

स्वामी विवेकानन्द प्राच्य तथा पाश्चात्य के बीच समन्वय सेतु थे। वे भारत की एक महान् तथा सुयोग्य सन्तान थे, परन्तु वे भारत के समान ही पश्चिमी देशों में भी सुपरिचित थे।.... १८९३ ई. में वे शिकागो की धर्म महासभा में गये और वहाँ जिन लोगों ने भी उनकी बातें सुनीं, उन्होंने उनके भीतर एक सन्त तथा ऋषि का दर्शन किया। उन्होंने एक सार्वभौमिक धर्म का प्रचार किया और मनुष्य के मूल्य तथा महत्त्व पर सर्वाधिक बल दिया है। कोई व्यक्ति चाहे धनी हो या निर्धन, उच्चवर्ण का हो या निम्नवर्ण का, पापी हो या पुण्यात्मा – प्रत्येक मनुष्य में दिव्यता का स्फुलिंग विद्यमान है। सभी के भीतर ईश्वर का आलोक विद्यमान होने के कारण सभी लोग समान हैं। यही स्वामी विवेकानन्द के धर्ममत की सार बात है। मन्दिर, मस्जिद, या यहूदियों का उपासनालय – सर्वत्र ही ईश्वर का दर्शन प्राप्त होता है। वे सर्वव्यापी हैं, उन्हें प्राप्त करने के लिये किसी विशेष धर्म या विशेष अनुष्ठान का आश्रय लेने की बाध्यता नहीं है।

वस्तुत: धर्म के दो पहलू हैं – एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक । देश तथा समाज के कल्याण हेतु स्वामी विवेकानन्द ने धर्म के सकारात्मक पहलू को ही चुन लिया था । नकारात्मक दृष्टिकोण उग्र साम्प्रदायिकता को जन्म देता है। मानव- मानव के बीच भेदभाव तथा द्वन्द्व को बढ़ा देता है। केवल धर्म के सन्दर्भ में ही नहीं, विवेकानन्द के समग्र चिन्तन तथा परिकल्पना में किसी भी नकारात्मक तत्त्व को स्थान नहीं मिला । इसीलिये स्वामी विवेकानन्द और उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस को प्रचलित अर्थों में विशुद्ध धर्माचार्य मात्र नहीं माना जाता । इन लोगों ने जिन धर्मोपदेशों का प्रचार किया है, उनके तथा किसी परिपक्व समाज-सुधारक की नीति के बीच कोई पार्थक्य नहीं है,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

किसी भी यथार्थ मानवतावादी विचारक के मत के साथ कोई भेद नहीं है। रामकृष्ण परमहंस ने कहा है, "खाली पेट धर्म नहीं होता", "जिसका यहाँ (इहलोक में) नहीं, उसका वहाँ (परलोक में) भी नहीं।" और उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, "मैं उस धर्म में विश्वास नहीं करता, जो विधवा के अश्रु नहीं पोंछ सकता, जो भूखे के मुख में अन्न नहीं पहुँचा सकता"; कहा है, "मनुष्य की तो बात ही क्या, जब तक एक कुत्ता भी भूखा रहेगा, तब तक उसे खिलाना ही मेरा धर्म होगा", कहा है, "जीवन्त देवता मनुष्य के रूप आकर तुम्हारे सामने खड़े हैं, उनकी सेवा करना ही तुम्हारा धर्म है।" किसी भी देश के, किसी भी साम्प्रदायिक धर्माचार्य के मुख से, किसी भी काल में, क्या ऐसी बातें सुनने को प्रायः नहीं मिलती।

स्वामी विवेकानन्द किसी भी प्रकार की अलौकिकता को प्रश्रय नहीं देते थे। उन्होंने वेदान्त के धार्मिक- दार्शनिक भावों को आत्मसात् करके उसे नवीन युग की अवस्था तथा आवश्यकता के अनुसार उपयोगी बनाकर उसकी स्थापना की थी । इसे उन्होंने व्यावहारिक वेदांत नाम दिया। स्वामी विवेकानंद ने धर्म को मानव कल्याण से युक्त किया। वे मानते थे कि संसार के समस्त ग्रंथों में वेदांत ही एक ऐसा धर्मग्रंथ है जिसकी शिक्षाओं के साथ बाह्य प्रकृति के वैज्ञानिक अनुसंधान प्राप्त परिणामों का संपूर्ण सामंजस्य है। वर्तमान समय में धर्म और विरासत जैसे शब्द सहसा अधिक महत्वपूर्ण हो गये हैं। अब पश्चिमीकरण को भारतीय कट्टरता का जवाब और भारतीय कटट्रता को पश्चिमीकरण का जवाब बनाकर पेश किया जा रहा हैं। ऐसी कठिन घड़ी में हमें विवेकानंद के धर्म दर्शन को समझना होगा। उन्होंने कहा कि "सार्वभौम धर्म की संभावना पर सोचने की आवश्यकता नहीं, सार्वभौम धर्म तो है ही । वस्तुतः प्रत्येक धर्म सार्वभौम धर्म है। हम अपनी सुविधा तथा बाह्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उस सार्वभौमता की उपेक्षा कर उसे साम्प्रदायिक बना देते हैं।स्वामी विवेकानंद स्पष्ट रूप से कहते हैं कि सार्वभौम धर्म मानने का अर्थ अलग से किसी धर्म को मानने की आवश्यकता नहीं है, हम चाहे जिस धर्म को अंगीकार करें, उसी में डूबें, उसी की विशिष्टता के अनुरूप चलें, हम 'सार्वभौम धर्म' को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मानने लगेंगे। हम धर्म की आन्तरिकता को समझें। बाह्यता पर आवश्यकता से अधिक बल देने के कारण ही धर्मों में साम्प्रदायिकता का प्रवेश होता है। हम अपने धर्म का पालन करें किन्तु यह समझें कि सत्य प्राप्ति के अनेक मार्ग संभव हैं। अपने धर्म में रहते हुए हम संकीर्णता से उपर उठ सकें तो यही सार्वभौमता है " आज धर्म के नाम पर जितने दंगे-फसाद और विकृतियाँ हैं वे भी विवेकानंद के व्यावहारिक चिंतन द्वारा हल की जा सकती हैं। विवेकानंद के अनुसार कोई भी धर्मग्रंथ हमें धार्मिक नहीं बना सकता। हम दुनिया के सारे धर्मग्रन्थ पढ़ डाले । परन्तु संभव है कि फिर भी ईश्वर या धर्म का तनिक भी ज्ञान न हो। दुनिया में पैदा हुए विद्वानों में से चाहे हमारी बुद्धि सबसे अधिक प्रखर क्यों न हो, फिर हम ईश्वर तक जरा भी न पहुँच सकें। प्रत्युत क्या तुमने नहीं देखा कि उच्चतम बौद्धिक शिक्षा से कितने घोर अधार्मिक व्यक्ति उत्पन्न होते हैं। पाश्चात्य संस्कृति का बड़ा दोष यह है कि तुम केवल बौद्धिक शिक्षा की ही चिंता करते हो, हृदय की ओर ध्यान नहीं देते। इसका फल यह होता है कि मनुष्य दस गुना स्वार्थी हो जाता है। यही नाश का कारण होगा। यदि हृदय और बुद्धि में विरोध उत्पन्न हो, तो तुम हृदय का अनुसरण करो, क्योंकि बुद्धि केवल एक तर्क के क्षेत्र में ही काम कर सकती है, वह उससे परे नहीं जा सकती। केवल हृदय ही हमें * उच्चतम भूमि में ले जाता है, वहाँ तक बुद्धि कभी नही पहुँच सकती। हृदय बुद्धि का अतिक्रमण कर अन्तः स्फुरण को पा लेता है। बुद्धि कभी अन्तः स्फुरित नहीं हो सकती।

वर्तमान युग में धर्म की सभी रूढ़िगत प्रणालियाँ लुप्त होती जा रही हैं। धर्म, राजनीति, अर्थ व्यवस्था तथा समाज व्यवस्था एक नया मोड़ ले रही है। मनुष्य हजारों वर्षों तक आदिम अवस्था में रहा। इसके बाद उस समाज की उच्छृंखल वृत्तियों पर नियंत्रण पाने के लिए धर्म ने एक नई समाज व्यवस्था को जन्म दिया किन्तु इसमें कई ऐसी मान्यताएँ घुसेड़कर समाज को सदियों तक अंधा बनाया जाता रहा, उसे संकीर्ण एवं भयभीत भी बनाया गया। उसने वर्ग भेद पैदा किया। धर्म के नाम पर उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी गई, जुबान पर ताले लगा दिये गये, कानों में इयर प्लग डाल दिये

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जिससे वह दूसरों को न देख सकें, न सुन सके, न अपने धर्म के खिलाफ बोल सके। उसके गुरु ने जितना व जो कुछ कह दिया उसी के चारों और आँखों पर पट्टी बाँधकर घाणी के बैल की भाँति चक्कर लगाता रहे । इससे मानव का विकास अवरुद्ध हुआ। परम्परा केवल ज्ञान की होती है। शास्त्र तत्कालीन ही होते हैं। प्राचीन काल में रचित आज के समाज का मार्गदर्शन नहीं कर पा रहे हैं। समय, परिस्थितियाँ, वातावरण, मानसिकता, शासन, व्यवस्था, भावनाएँ, आकांक्षाएँ आदि सब बदलती रहती हैं। इस परिवर्तनशील जगत् में कुछ भी स्थिर नहीं हैं। पुराने शास्त्रों के सभी नियम आज समाज को गति नहीं दे सकते। सत्य को स्वीकार करना ही पड़ेगा चाहे वे वेद, कुरान, बाइबल, धम्मपद आदि के विरुद्ध ही क्यों न हो। किसी खूँटे से बँधा व्यक्ति आगे की दौड़ कैसे लगा सकता है ? अपने घोंसले में बन्द पक्षी आकाश की विशालता को कैसे जान सकता है ? उसे अपने घोंसले से बाहर आना ही पड़ेगा। बन्धनों को तोड़ना ही मुक्ति का मार्ग है ।

जगत के सभी धर्मों में एकता कैसे लायी जाए, इसका समाधान नहीं मिलता । प्राचीन काल में अनेक लोग यह मानते थे कि जो धर्म सबसे अच्छा हो, संसार भर के मनुष्यों को उसी धर्म में दीक्षित हो जाना चाहिए। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक धर्म के लोग अपने ही धर्म का व्यापक प्रचार करने लगे, जिनमें से इसलाम और ईसाइयत के प्रचारकों ने सबसे अधिक उत्साह दिखलाया। शिकागो में जो विश्व-धर्म-सम्मेलन हुआ था, उसका भी एक आशय यह था कि संसार में सर्वोत्तम धर्म कौन-सा है, इसका निर्णय कर लिया जाए। किन्तु उस सम्मेलन में स्वामीजी ने अपना जो विचार रखा, उससे सभी प्रतिनिधि चमत्कृत हो उठे। उन्होंने कहा, "धार्मिक एकता कैसे हो, इस बात की यहाँ काफी विचिकित्सा हुई है। इस सम्बन्ध में मेरा जो अपना मतवाद है, उसे प्रस्तुत करने का साहस मैं नहीं करूँगा । किन्तु इतना कहना आवश्यक है कि यदि कोई व्यक्ति यह समझता हो कि धार्मिक एकता का मार्ग एक धर्म की विजय और बाकी का विनाश है, तो मैं उससे निवेदन करूँगा – 'बन्धु ! तुम्हारी आशा पूरी नहीं होगी।' क्या मैं यह चाहता हूँ कि सभी ईसाई हिन्दू हो जाएँ? भगवान करे कि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ऐसा नहीं हो। क्या मैं यह चाहता हूँ कि सभी हिन्दू और बौद्ध ईसाई हो जाएँ? ईश्वर न करे कि ऐसा हो । ... ईसाई को हिन्दू या बौद्ध अथवा हिन्दू और बौद्ध को ईसाई नहीं होना है। किन्तु इनमें से प्रत्येक का कर्तव्य है कि वह अन्य धर्मों के सार अपने भीतर पचा ले और अपनी वैयक्तिता की पूर्ण रूप से रक्षा करते हुए उन नियमों के अनुसार अपना विकास खोजे, जो उसके अपने नियम रहे हैं ।" अन्यत्र उन्होंने कहा है, "आत्मा की भाषा एक है, किन्तु जातियों की भाषाएँ अनेक होती हैं । धर्म आत्मा की वाणी है। वही वाणी अनेक जातियों की विविध भाषाओं तथा रीति-रिवाजों में अभिव्यक्त हो रही है ।"

स्वामी विवेकानंद धर्म को व्यक्ति और समाज दोनों के लिए उपयोगी मानते थे । धर्म के विरुद्ध संसार में जो भयानक प्रतिक्रिया उठी है, उसका निदान वे यह देते थे कि दोष धर्म का नहीं, धर्म के गलत प्रयोग का है। ठीक वैसे ही जैसे विज्ञान से उठनेवाली भीषणताओं का दायित्व विज्ञान पर न होकर, उन लोगों पर है जो विज्ञान का गलत उपयोग करते हैं । स्वामीजी का विचार था, "धर्म को समाज पर जिस ढंग से लागू किया जाना चाहिए था, उस ढंग से वह लागू नहीं किया गया। हिन्दू अपनी सारी धार्मिक योजनाओं को कार्य के रूप में परिणत करने में असफल भले ही रहा हो, किन्तु यदि कभी भी कोई विश्वधर्म जैसा धर्म उत्पन्न होनेवाला है, तो वह हिन्दुत्व के ही समान होगा जो देश और काल में कहीं भी सीमित या आबद्ध नहीं होगा, जो परमात्मा के समान ही अनन्त और निर्बाध होगा तथा जिसके सूर्य का प्रकाश कृष्ण और ईसा के अनुयायियों पर, 'सन्तों और अपराधियों पर एक समान चमकेगा । यह धर्म न तो ब्राह्मण होगा, न बौद्ध, न ईसाई, न मुसलमानी, प्रत्युत, वह इन सबके योग और सामंजस्य से उत्पन्न होगा ।"

मोटे तौर पर, स्वामी विवेकानंद के कार्यों में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की छाप दिखायी देती है। अपने विचार और धर्म के क्षेत्र में उन्होंने हिन्दू धर्म से प्रेरणा ली और सामाजिक जीवन के क्षेत्र में इसलाम से । इतिहास के सामान्य चौखटे में कबीर, नानक, दादू और सूरदास का कार्य क्षणिक और आधारहीन प्रतीत हो सकता है, पर उनमें उस युग के हम लोगों के लिए एक नैतिकता और प्रेरणा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निहित है। यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में इने-गिने व्यक्ति इस प्रकार की महान् गरिमामय उपलब्धियाँ हासिल कर सकते थे, तो फिर आध्यात्मिक स्थिरता और सामाजिक ऐक्य की दिशा में तथा उस लक्ष्य की सिद्धि में, जिसे विवेकानन्द 'मनुष्य-निर्माण' कहा करते थे, और भी महत्तर उपलब्धियाँ हासिल क्यों न की जा सकेंगी, यदि दोनों धर्म समझ-बूझकर, योजनाबद्ध रूप से अपनी शक्तियों को रचनात्मक और सर्जनशील तरीके से नियोजित करें? ऐसे प्रयत्न को आधुनिक लोकतंत्र के सिद्धान्त और व्यवहार का बल प्राप्त होगा तथा विश्व की शक्तियों के संगठन से सहायता मिलेगी। इसकी गरिमामण्डित परिणति होगी एक ऐसे भारतीय राज्यतंत्र के विकास में, जो आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर आधारित होगा और जिसमें मानवता के कल्याण के लिए एक नैतिक उन्माद

संदर्भ

1.धर्मतत्त्व, स्वामी विवेकानन्द

2. आधुनिक चिंतन में वेदान्त, डॉ. महेन्द्र शेखावत

3. स्वामी विवेकानन्द और उनका अवदान,

स्वामी विदेहात्मानन्द

4.विवेकानन्द – मनीषियों की दृष्टि में, स्वामी विदेहात्मानन्द

5.विवेकानन्द साहित्य, खण्ड -2